राजस्थान का अनूठा महोत्सव - 'गणगौर'

[चैत्र कृष्ण प्रतिपदासे चैत्र शुक्ल तृतीयातक]

डॉ. मनीषा शर्मा
प्राचार्य
राजस्थान शिक्षक प्रशिक्षण विद्यापीठ, जयपुर

देवाधिदेव भगवान् शंकर की अर्धाङ्गिनी भगवती पार्वती की पति-भक्ति की कोई समता नहीं। दाम्पत्यजीवन में विशुद्ध प्रेम का स्रोत शंकर-पार्वती में पूर्णरूप में अनुस्यूत है। अहंकारी दक्षप्रजापति द्वारा सम्पादित यज्ञानुष्ठान में अपने पति सदाशिव का अपमान सती से सहन नहीं हुआ। उन्होंने यज्ञस्थल में ही सभी उपस्थित देवगणों एवं ऋषिगणों के समक्ष योगाग्नि द्वारा अपने शरीर का दाह कर लिया। पौराणिक आख्यान बताते हैं कि सती ने पुनः पर्वतराज हिमालय के घर जन्म धारण किया तथा वे पार्वती- इस नाम से जानी गयीं। देवर्षि नारद द्वारा प्रोत्साहित अपने पूर्वजन्म के पति शिव को आराधना और कठिन तपस्या द्वारा पुनः पतिरूप में प्राप्त करने का निश्चय कर उन्होंने सभी को आश्चर्यचकित कर डाला। माता द्वारा तपस्या का निषेध किये जाने पर उन्हें उमा नाम से भी जग जानता है। उनकी घोर तपस्या से प्रसन्न हो आशुतोष शंकर ने उन्हें अर्धाङ्गिनीरूप में स्वीकार किया। दाम्पत्यप्रेम के उच्चादर्श की शिक्षा देने हेतु शिव-पार्वती के रूप में ईसरगौर (ईश्वर-गौरी) की पूजा का विधान विशेषरूप से राजस्थान में ईसर-गणगौर के महोत्सवरूप में बड़ी ही श्रद्धा से सम्पन्न होता आया है। यह गौरपूजा सौभाग्यवती स्त्रियों और कन्याओं का विशेष त्योहार है। राजस्थान में कन्याओं के लिये विवाह के उपरान्त प्रथम चैत्र शुक्ल तृतीया तक गणगौर का पूजन करना आवश्यक कर्तव्य समझा जाता है। वे होलिकादहन की भस्म और तालाब की मिट्टी से ईसर-गौर की प्रतिमाएँ बनाती हैं। उन्हें वस्त्रालंकरणों से सुसज्जित कर घरके चौक में स्थापित करके श्रद्धापूर्वक उनकी पूजा करती हैं। सौभाग्यवती स्त्रियों के साथ कुमारी कन्याएँ भी श्रेष्ठ वर की प्राप्ति के लिये इस पूजन में भाग लेती हैं। इन दिनों पूजा के लिये हरी दूर्वा, पुष्प और जल लाने हेतु ये अपनी टोलियाँ बनाकर प्रतिदिन प्रातः सुमधुर गीत गाती हुई घर से निकलती हैं। पास के उद्यानों एवं तालाबों-सरोवरों से कलशों में जल भरकर दूर्वा-फल-फूलसहित लौटती हैं और पवित्र स्थान पर गणगौर की पूजा करती हैं। इस समय गाये जानेवाले गीतोंमें एक सुमधुर गीत इस प्रकार है-

बाड़ीवाला बाड़ी खोल बाड़ी की किवाड़ी खोल, छोरिया आई दूकान।
ये कुणजी की बेटी छो कुणारी जी भैण छो कै तुम्हार नाम छ।
म्हे ब्रह्माजी री बेटी छा। ईसरदास की भैण छा सेवा म्हारो नाम छ ।
बाड़ीवाला बाड़ी खोल बाड़ी की किवाड़ी खोल।

गौरी की प्रार्थना के साथ उन कन्याओं के गीत में वासन्तिक प्रेमानुराग भी देखने में आता है। जैसे-

गौर ए गनगौर माता! खोल किबाड़ी । बाहर ऊबी रौवां, पूजण वाली ॥
पूजौ ए पुजावो बाई, क्या फल माँगो । अन्न मांगो धन माँगाँ लाछ ! माँगाँ लक्ष्मी ॥
जलहर जानी काकल माँगाँ राता देई माई। कान कँवर सौ वीरो माँगाँ, राई-सी भोजाई ॥
ऊँट चढ्यो बहणेई माँगाँ चुड़लाबाली भहणा।

एक दूसरे गीत में वे गाती हैं-

गौरी तिहारेडा़ देश में जी, चोखी सी मेंहदी होय ।
सो म्हे लाइ थी पूजंता जी, सोम्हरि अविचल होय।
गौरी तिहारेडा़ देश में , जो चोखी सो काजल होय ।
चोखो सो गहणाँ होय चोखो सो कापड़ होय।
सोम्हे पहरयो थो पूजंता जी, सो म्हारे अविचल होय।

गणगौर की पूजा के अनेक अवसरों के गीतों की प्रमुख पंक्तियाँ जिनमें कुमारी कन्याएँ परिवार के प्रति अपने कोमल भावों को इस प्रकार व्यक्त करती हैं-

ईसरदास ल्याया छ गनगौर।
प्याला पीती आव छ गनगौर।
मुजरा करता आव छ राठोर।

तथा-

म्हारी गौर तीसाई औ राज घूँठ्यारी मुकट करो।
म्हारी गौरां न पाणीड़ो प्याई औ राज, घांट्यरी मुकट करो ॥
ईसरदास बीरा कौ काँगसियो म्हे मोल लेस्याँओ राज।

चैत्र शुक्ल तृतीया को प्रातः काल को पूजा के बाद तालाब, सरोवर, बावड़ी या कुएँ पर जाकर मङ्गलगान सहित गणगौर की प्रतिमाओं का विसर्जन किया जाता है। गणगौर की विदाई अथवा विसर्जन का दृश्य देखने योग्य होता है। उस समय कन्याएँ एवं विवाहिताएँ वस्त्राभूषणों को धारण कर सुसजित हो उसमें भाग लेती है। ईसर-गणगौर की प्रतिमाओं को जल में विसर्जित किया जाता है।

राजस्थान के राजघरानों की ओर से इसी चैत्र शुक्ल तृतीया को ईसर और गौरी की विशाल काष्ठप्रतिमाओं को वस्त्राभूषणों द्वारा सुसज्जित कर उनकी सवारी निकाली जाती है। यथास्थान सरोवर या तालाब के किनारे महोत्सव मनाने के बाद उन्हें गीत गाते हुए पुनः राजप्रासादों में स्थापित किया जाता है। गौरी को सुन्दर वस्त्राभूषणों से सुसज्जित किया जाता है। ईसर को ढाल तलवार धारण कराकर वीरवेशयुक्त बनाया जाता है। गणगौर की सवारी में राजघरानों के सरदार अपने दरबारियों, राजकीय अधिकारियों और पूरे लवाज़िमसहित सम्मिलित होते हैं। गाजे-बाजों के साथ इन राजघरानों की राजधानियों- जयपुर, उदयपुर, जोधपुर, कोटा, बूँदी, झालावाड़ आदि के सवारियों के दृश्य विशेष दर्शनीय बन जाते हैं। स्थानीय लोगों के साथ आस- पास की ग्रामीण जनता भी इसमें बड़ी संख्या में एकत्र होकर भाग लेती है। ऐसे समय में अच्छे-खासे मेलों-जैसा वातावरण वहाँ बन जाता है। कहीं-कहीं यह उत्सव तीन-चार दिनों तक चलता रहता है। लोक संस्कृति मुखर हो उठती है। वहाँ के बाँके कुँवर आँखों में तीखा काजल लगाकर हाथों में चिकनी लाठियाँ लेकर धोती-कुर्ता पहने मांथे पर चन्दनलेप लगाकर बाजारों में नर्तक बने घूमते दिखायी देते हैं। नगाड़े-ढोल की गूँज से सारे वातावरण में अलौकिक उत्साह छा जाता है। जनसमूह में सभी ओर विशेष आनन्द-सा छा जाता है।

यूँ तो यह राजस्थान का प्रमुख लौकिक त्योहार है और बड़े ही समारोह से इसे यहाँ मनाया जाता है, किंतु ईश्वर-गौरी-पूजन के रूप में दोलोत्सव नाम से यह अन्यत्र भी अनुष्ठित होता है। इस संदर्भ में 'निर्णयसिन्धु' में लिखा है-

चैत्रशुक्लतृतीयायां गौरीमीश्वरसंयुताम् ।
सम्पूज्य दोलोत्सवं कुर्यात् ।।

देवीपुराण में भी बताया गया है-

तृतीयायां यजेद्देवीं शङ्करेण समन्विताम् ।
कुंकुमागरुकर्पूरमणिवस्त्रसुगन्धकैः ।।
स्त्रग्गन्धधूपदीपैश्च नमनेन विशेषतः।
आन्दोलयेत् ततो वस्त्रं शिवोमातुष्टये सदा ।।

इस प्रकार चैत्र शुक्ल तृतीया 'गणगौर' पूजन का एक विशिष्ट दिवस है। यह सौभाग्य तृतीया के रूप में भी प्रसिद्ध है।

काँगसियो बाई क सिर चढयो जी राज।

प्रत्येक बहन की कामना होती है कि विवाह के समय उसका भाई उसे चुनरी ओढ़ाये, अतः वह गाती है-

बड़े से बड़ो मेरो ईसरदास बीर, बस छोटो कानीराम वीर।
भाय मिला व मेरो ईसरदास बीर चूनड़ी ऊढा़ व मेरो कानीराम बीर।

इसी प्रकार यह गाती है-

ईसरदासनी और मांडल्यो गणगौर।
कानीरामजी औ माँडल्यो गनगौर।
रोवां की भाभी पूजल्यो गनगौर।
सुहागन रानी पूजल्यो गणगौर।
थारो ईसर म्हारी गणगौर ।।
गौर मचा व रमझौल।
सुहागन रानी पूजल्यो गनगौर।।

व्यावल वर्ष (विवाह वाले वर्ष) की गणगौर को प्रत्येक विवाहिता अपनी छः आठ, दस संख्यक अन्य अविवाहिताओं के वरणपूर्वक साथ लेकर ईसरगौर की पूजा करती है। उस सौभाग्यवती विवाहिता को मिलाकर कुल लड़कियों की संख्या सात , नौ , या ग्यारह तक हो सकती है। यह पूजाक्रम चैत्र कृष्ण प्रतिपदा से आरम्भ होकर चैत्र शुक्ल तृतीया तक रहता है। पूजा के समय के कुछेक गीत इस प्रकार भी गाये जाते हैं-

गौर गौर गोमती ईसर पूजै पारवती।
पारवती का आला गोला लागे छ सोना का टीका।।

और अपने पीहर से आये हुए भाइयों के प्रति वे कैसे भाव प्रदर्शित करती हैं-

महारो भाई हेमल्यो खेमल्यो लाडू ल्यायो पेड़ा ल्यायो।
सिंघाड़ा की सेवा ल्यायो ।।
झरझरती जालेबी ल्यायो ओढा़वाने चूनड़ी ल्यायो।
म्हारो भाई हेमल्यो खेमल्यो।।